N.A.

Satyanarayan bratapuja katha

सत्यनारायण व्रत पूजा कथा

Sanskrit

Paper - Printed

N.A. (very old)

28 Folio

9.6" x 4.3"

Incomplete

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

।। सत्यनारायण व्रत पूजा कथा ।।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

॥ अथ सत्यनारायणव्रतपूजाकथा ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

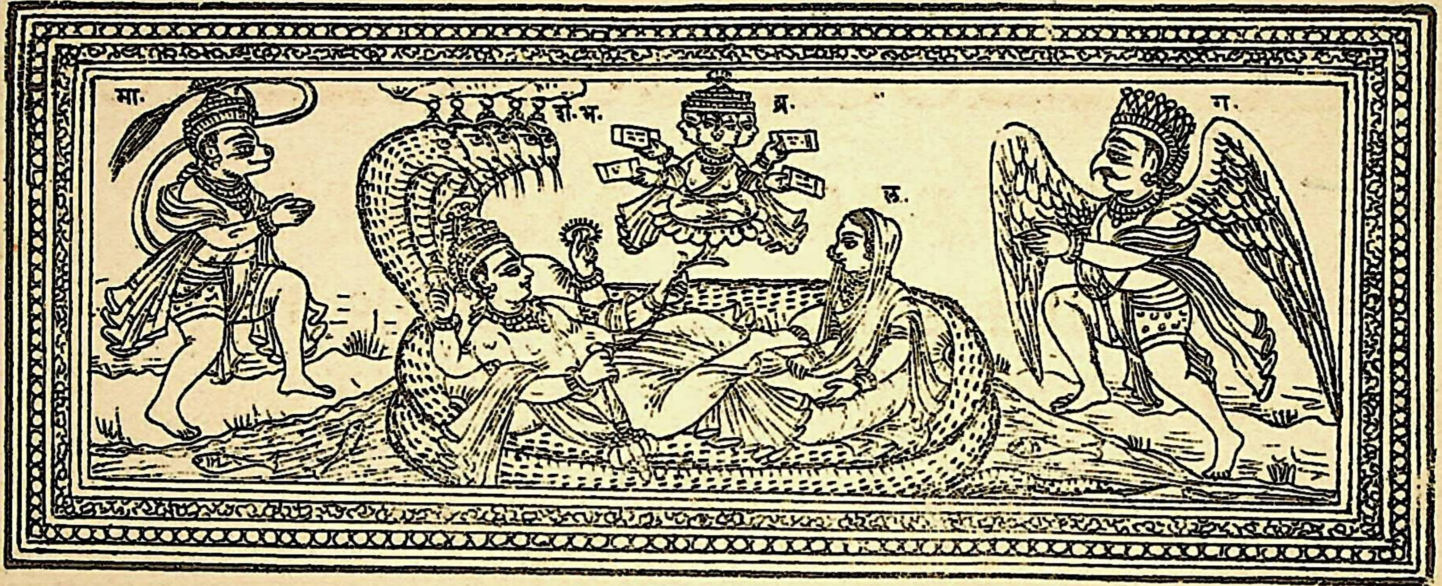

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

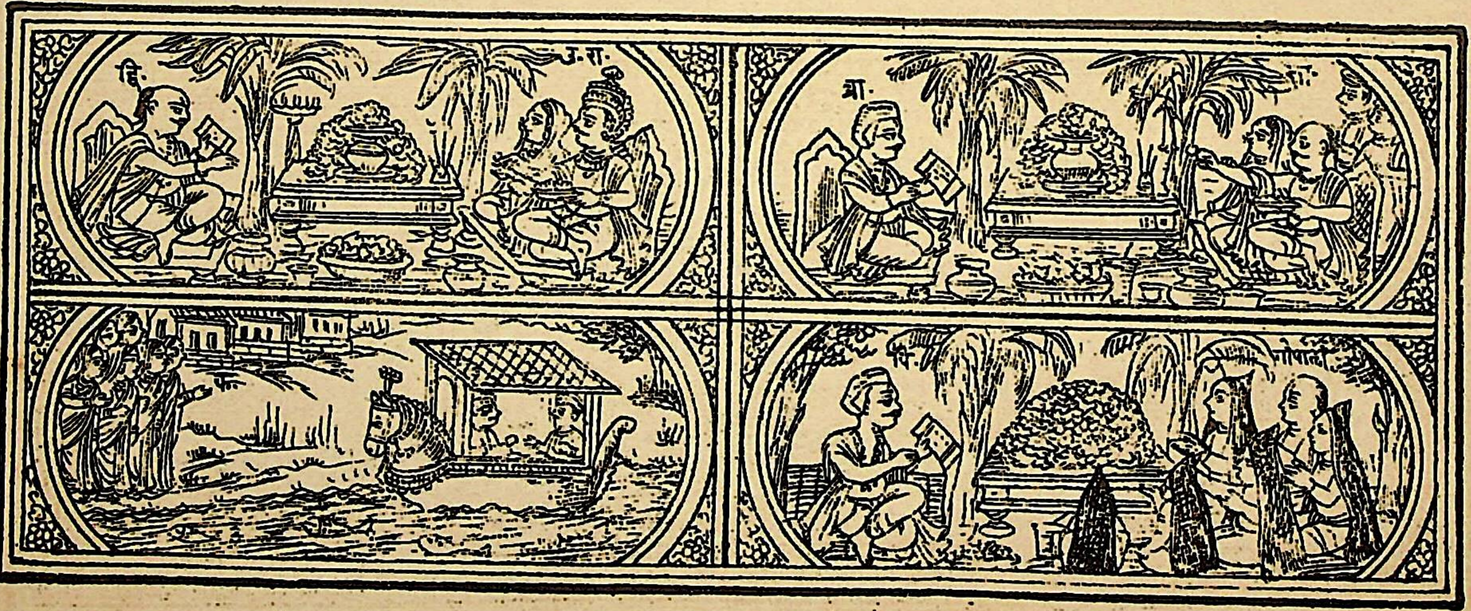

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्रीसत्यनारायणव्रत सामग्री.

१ कदलीस्तंभाः
२ आम्रपल्लवतोरणम्.
३ पंचपल्लवाः
४ स्कचणीमूर्तिः
५ कलशाः
६ यज्ञोपवीतम्
७ पंचरत्नानि
८ वस्त्रोपवस्त्रे
९ तंदुलाः
१० कुंकुमम्
११ अबीरः
१२ गुलालः
१३ धूपः
१४ पुष्पाणि
१५ तुलसीदलानि

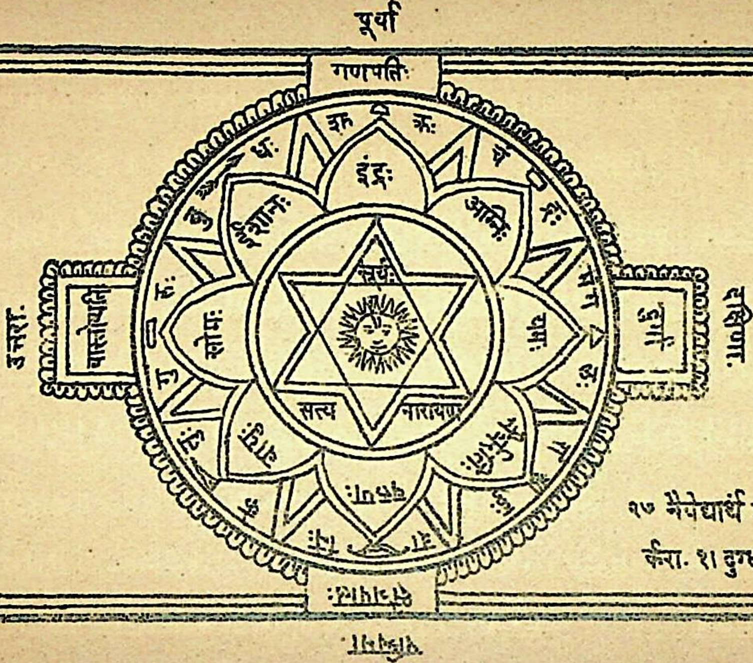

१६ नारीकेलफल.
१७ तांबूलदलानि.
१८ पूगीफलानि
१९ नानाफलानि
२० माला.
२१ पंचामृतपदार्थाः
दुग्धं, दधि, घृतं, मधु,
शर्करा.
२२ पुण्याहवाचनकलशाः
२३ भगवदर्थे पीठम्
२४ पीठम्
२५ रंगवल्ल्यर्थे रंगाः
२६ दक्षिणार्थे द्रव्यम्
२७ नैवेद्यार्थं प्रसादपदार्थाः १। घृत १। शा-
र्करा. १। दुग्धं १। गोधूमचूर्ण. १। कदलीफलं.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ अब सत्यनारायणकी पूजाविधि कहतेहैं ॥ व्रत करनेवाला पुरुष संक्रांतिमें पौर्णमासीमें अमावस्यामें एकादशीमें अथवा जिस किस दिनमें सायंकालविषै स्नान करके पूजाके स्थानमें आके आसनपर बैठ आचमन कर पवित्री धारण कर गणेशजी देवीजी वरु-

अथ सत्यनारायणपूजाविधिः ॥ व्रतीसंक्रांतौपौर्णमास्यांचैकादश्यांयस्मिन्कस्मिन्दिनेवासायंकालेस्नानंकृत्वा पूजास्थानमागत्य आसनउपविश्याचम्य पवित्रधारणंकृत्वा गणेशगौरीवरुणदेवतानां प्रतिष्ठावाहनेकृत्वा संकल्पंकुर्यात् ॥ अद्येत्यादि अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहंसकलदुरितोपशमनसर्वापच्छांतिपूर्वकसक

१ णजी इन देवताओंकी प्रतिष्ठा और आवाहन कर संकल्पको करै. अद्येत्यादि देशकालका उच्चारण कर अपना गोत्र अपना नाम कहके सब प्रकारके पापोंके नाशके लिये सब दुःखोंकी शांति-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

॥ १ ॥ पूर्वक सब प्रकारके मनोरथोंकी सिद्धिके लिये जितनी सामग्री प्राप्त होसकी है तिन्हों करके गणेश गौरी वरुणदेव गणपति आदि पांच लोकपाल सूर्य आदि नवग्रह इन्होंके पूजनपूर्वक

लमनोरथसिद्ध्यर्थंयथासंपादितसामग्र्यागणेशगौरीदेवतागणपत्यादिपंचलोकपालदेवतासूर्यादिनवग्रहदेवतापूजनपूर्वकंपूर्वमंगीकृतं श्रीसत्यनारायणपूजनंकथाश्रवणंचकरिष्ये ॥ अथ गणेशपूजनंगणानान्त्वेति आवाहनं विघ्नराजायनमः आसनंस० लंबोदरायनमः पाद्यंस०शंकरसूनवेनमः अर्घ्यंस०उमापुत्रायनमः स्नानंस० कुब्जायनमः उपवीतंस० शूर्पकर्णायनमः वस्त्रंस० गणेश्वरायनमः गंधंस० विघ्नविनाशिनेनमः पुष्पंस० विकटायनमः धूपंस० वामनायनमः ॥ १ ॥

पहिले बोला हुआ सत्यनारायणके व्रतका पूजन और कथा श्रवण मैं करूंगा । प्रथम गणे-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शर्जीका पूजन कहतेंहैं. अर्घ्य पाद्य आचमन स्नान गंध अक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्य आचमन सुगंधिद्रव्य नागरपान सुपारी सोनाकी दक्षिणा उन सबको तिन तिन मंत्रोंकरके समर्पित करूंहूं.

दीपंस० सर्वदेवायनमः नैवेद्यंस० सर्वार्तिनाशिनेनमः फलंस० विघ्नहर्त्रेनमः फलतांबूलंस० हिरण्यगर्भेतिद० गणाधिपतयेनमः अबीरगुलालंसम० धूम्रायनमः प्रदक्षिणांस० देवेशायनमःनमस्कारंस० इतिगणपतिपूजनं ॥ एवंपूजाप्रकर्तव्या षोडशैरुपचारकैः ॥ अनेनपूजनेन गणपतिदेवता प्रीयतां॥एवमेव वरुणादिदेवताभ्योनमः ॥ एवंसूर्यादिग्रहाणांतत्तन्मंत्रैः पूजनंकुर्यात् ॥ आकृष्णेनरजसावर्तमानोनिवेशयन्नमृतंमर्त्यंच ॥ हिरण्ययेनसवितारथेनादेवोयातिभु

ऐसे वरुणादि देवताओंका पूजन करै. इसप्रकार सूर्य आदि ग्रहोंका तिन तिन मंत्रोंसे पूजन करै.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वनानिपश्यन् ॥ सूर्यायनमः सूर्यमावाहयामि ॥ गंधाक्षतपुष्पंसमर्पयामि
॥ १ ॥ एवंसर्वत्र ॥ इमंदेवाअसपत्न ँ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्या
यमहतेज्यानराज्यायेंद्रस्येंद्रियाय ॥ इममसुष्यपुत्रममुष्यैपुत्रमस्यैविशऽएषवो
मीराजासोमोऽस्माकंब्राह्मणाना ँ राजा ॥ चंद्रायनमः ॥ २ ॥ अग्निर्मूर्द्धादिवःक
कुत्पतिःपृथिव्याअयम्॥अपा ँ रेता ँ सि जिन्वति॥भौमायनमः॥३॥ उद्बुध्यस्वा
ग्नेप्रतिजागृहीत्वमिष्टापूर्तेस ँ सृजेथामयंच॥अस्मिन्त्सधस्थेअध्युत्तरस्मिन्विश्वे
देवायजमानश्चसीदत ॥ बुधायनमः ॥ ४ ॥ बृहस्पतेअतियदर्योअर्हाद्युमद्विभा
तिक्रतुमज्जनेषु ॥ यद्दीदयच्छवसऋतप्रजाततदस्मासुद्रविणंधेहिचित्रम् ॥ बृह ॥ २ ॥
स्पतयेनमः ॥ ५ ॥ अन्नात्परिस्रुतोरसंब्रह्मणाव्यपिवत्क्षत्रंपयःसोमंप्रजापतिम्

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तेनसत्यमिंद्रियंविपानꣳशुक्रमंधसइन्द्रस्येन्द्रियमिदंपयोऽमृतंमधु।शुक्रायनमः
॥६॥शन्नोदेवीरभिष्टयआपोभवंतुपीतयेशंय्योरभिस्त्रवंतुनः॥ शनैश्चरायनमः ॥
॥७॥कयानश्चित्रआभुवदूतीसदावृधःसखा कयाशचिष्ठयावृता॥ राहवेनमः॥८॥
केतुंकृण्वन्नकेतवेपेशोमर्य्याऽअपेशसे ॥ समुषद्भिरजायथा॥ केतवेनमः ॥ १० ॥
ब्रह्मजज्ञानंप्रथमंपुरस्ताद्विसीमतःसुरुचोवेनआवः ॥ सबुध्न्याउपमाअस्यविष्ठा
सतश्चयोनिमसतश्चविवः॥ ब्रह्मणेनमः ॥ ११ ॥ विष्णोररराटमसिविष्णोः श्नप्
त्रेस्थोविष्णोःस्यूरसिध्रुवोसिवैष्णवमसिविष्णवेत्वा ॥ विष्णवेनमः ॥ १२ ॥
नमः शंभवाय च मयोभवायच नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय
चशिवतरायच ॥ शिवायनमः ॥१३॥ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्ष

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अब सत्यनारायणके पूजनका प्रकार कहते हैं. पुष्पको हाथमें लेकै ध्यान करै. सत्यस्वरूप गुणोंको उ-
॥ ३ ॥ ल्लंघित करनेवाले गुणोंसेसहित लोकके ईश्वर त्रिलोकीके पति कौस्तुभमणिको धारण करनेवाले

त्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाणामुंमइषाणसर्वलोकंमइषाण ॥ लक्ष्म्यै नमः ॥ १४ ॥ अर्घ्यपाद्याचमनीयस्नानगंधाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्याचमनीय मुखवासतांबूलपूगीफलद्रव्याणि तत्तन्मंत्रैःसमर्पयामि ॥ अथसत्यनारायणपूजनप्रकारमाह ॥ पुष्पंगृहीत्वाध्यानंकुर्यात् ॥ ध्यायेत्सत्यंगुणातीतंगुणत्रयसमन्वितं ॥ लोकनाथंत्रिलोकेशंकौस्तुभाभरणंहरिम् ॥ १ ॥ नीलवर्णंपीतवस्त्रंश्रीवत्सपदभूषितम् ॥ गोविंदंगोकुलानंदंब्रह्माद्यैरपिपूजितम् ॥ इतिध्यानं ॥ २ ॥ व्यक्ताव्यक्तस्व

ऐसे श्रीकृष्णजीको ध्यान करै ॥ १ ॥ नीलवर्णवाले पीले वस्त्रोंवाले लक्ष्मीजी और भृगुके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चिन्हसे शोभित गौवोंको सुख देनेवाले गोकुलमें आनंद देनेवाले और ब्रह्मा आदि देवताओंसे पूजित किये ऐसे श्रीसत्यनारायणजीका ध्यान करै ॥ २ ॥ यहां ध्यान समाप्त हुआ ॥ प्रकट और नहीं प्रकट रूपवाले इन्द्रियोंके स्वामी ऐसे श्रीसत्यनारायणजीके अर्थ प्रणाम है. मैंने भक्तिसे यह अर्घ्य दिया है इसको आप ग्रहण कीजिये ॥ ३ ॥ यहां अर्घ्य समाप्त हुआ ॥ हे

रूपायहृषीकपतयेनमः॥ मयानिवेदितोभक्त्याअर्घोयंप्रतिगृह्यतां॥३॥ इत्यर्घ्यं॥
नारायणनमस्तेस्तुनरकार्णवतारक॥ पाद्यंगृहाणदेवेशममसौख्यंविवर्धय ॥४॥
इतिपाद्यं ॥ मंदाकिन्यास्तुयद्वारिसर्वपापहरंशुभं ॥ तदिदंकल्पितंदेवसम्यगाच

नारायण ! आपको नमस्कार है. हे नरकरूपी समुद्रसे तारनेवाले ! मैंनें दिया जो पाद्य तिसको ग्रहण कीजिये; और मेरे सुखको बढावो ॥ ४ ॥ ऐसे पाद्य देवै ॥ श्रीगंगाजीका जो जल है वह सब प्रकारके पापोंको हरता है और शुभ है. हे देव ! आपकेलिये निवेदित किया है आप अच्छीतरह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

 आचमन कीजिये ॥ ५ ॥ ऐसे आचमन देवै ॥ हे देव ! हे पुरुषोत्तम ! हे अनाथोंके स्वामी !
॥ ४ ॥ हे सर्वज्ञ ! हे देवताओंके प्रणामसे प्रसन्न होनेवाले ! पंचामृतसे आप स्नान कीजिये ॥ ६ ॥ ऐसे
पंचामृतसें स्नान देवै ॥ वेदके सूक्तसहित यज्ञ और सामवेदसे युक्त सब वर्णोंको देनेवाले ऐसे

म्यतांत्वया ॥५॥ इत्याचमनं ॥ स्नानंपंचामृतैर्देवगृहाणपुरुषोत्तम ॥ अनाथनाथ
सर्वज्ञगीर्वाणप्रणतिप्रिय ॥६॥ इतिस्नानं ॥ वेदसूक्तसमायुक्तेयज्ञसामसमन्विते॥
सर्ववर्णप्रदेदेववाससीप्रतिगृह्यताम् ॥ ७॥ इतिवस्त्रं ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशैश्चनिर्मितं
ब्रह्मसूत्रकं ॥ यज्ञोपवीतदानेनप्रीयतांकमलापतिः॥८॥इतियज्ञोपवीतं॥ श्रीखंडं

दो वस्त्र आप ग्रहण कीजिये ॥ ७ ॥ ऐसे वस्त्र देवै ॥ विष्णु शिव इन्होंका बनाया जो जनेउ है ॥ ४ ॥
तिसके दान करकै लक्ष्मीपति प्रसन्न हो ॥ ८ ॥ ऐसे जनेऊ देवै ॥ दिव्यसुगन्धसे संयुक्त सुंदर ऐसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चंदनको हे देवताओंमें श्रेष्ठ ! आप ग्रहण कीजिये ॥ ९ ॥ ऐसे चंदन देवै. चमेलि आदि सुगंधित और मालति आदिके पुष्प मैं निवेदित कियेहैं सो हे प्रभो ! पूजाके अर्थ आप ग्रहण कीजियें ॥ १० ॥

चंदनंदिव्यंगंधाढ्यंसुमनोहरं॥विलेपनंसुरश्रेष्ठचंदनंप्रतिगृह्यतां॥९॥इतिचंदनं ॥ मल्लिकादिसुगंधीनिमालत्यादीनिवैप्रभो ॥ मयाहृतानिपूजार्थंपुष्पाणिप्रतिगृह्यतां॥१०॥इतिपुष्पाणि॥वनस्पतिरसोद्भूतोगंधाढ्योगंधउत्तमः ॥ आघ्रेयःसर्वदेवानांधूपोयंप्रतिगृह्यतां ॥ ११ ॥ इतिधूपः ॥ साज्यंचवर्तिसंयुक्तंवह्निनायोजितंम

ऐसे पुष्प देवै ॥ वनस्पतिके रससे उत्पन्न हुआ गंधसे युक्त हुआ उत्तम गंधरूप सब देवताओंको सूंघनेके योग्य ऐसा यह धूप है इसको आप ग्रहण कीजिये ॥ ११ ॥ ऐसे धूप देवै ॥ घी और बत्तीसे संयुक्त अग्निसे प्रकाशित किया ऐसे दीपकको हे देवताओंके ईश ! हे तीन लोकके अंधेरेको

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नाशनेवाले! आप ग्रहण कीजिये ॥ १२ ॥ ऐसे दीपक देवै ॥ घीसे पकाया चावल आदि हविष्य अन्न खांडसहित खीर और अनेक प्रकारके नैवेद्यको हे विष्णो! मेरेसे ग्रहण कीजिये ॥ १३ ॥

या ॥ दीपंगृहाणदेवेशत्रैलोक्यतिमिरापह ॥ १२ ॥ इतिदीपः ॥ घृतपक्वंहविष्यान्नंपायसंचसशर्करं ॥ नानाविधंचनैवेद्यंविष्णोमेप्रतिगृह्यतां ॥१३॥ इतिनैवेद्यः॥ सर्वपापहरंदिव्यंगांगेयंनिर्मलंजलं ॥ आचमनंमयादत्तंगृह्यतांपुरुषोत्तम ॥१४॥ इत्याचमनं ॥ लवंगकर्पूरयुतंतांबूलंसुरपूजितं ॥ प्रीत्यागृहाणदेवेशममसौख्यं

ऐसे नैवेद्य देवै ॥ सब पापोंको नाशनेवाला और आकाशसे प्राप्त हुआ ऐसा गंगाजल हे पुरुषोत्तम! आचमनके अर्थ ग्रहण कीजिये ॥ १४ ॥ ऐसे आचमन देवै ॥ लौंग कपूरसे संयुक्त किया और देवताओं करकै पूजित किया ऐसे तांबूलको हे देवेश! प्रीतिसे ग्रहण कर मुझकों सुखी की-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जिये ॥ १५ ॥ ऐसे नागरपान देवै ॥ हे देव ! मैंने यह फल आपके सन्मुख स्थापित कियाहै तिसकरिकै मुझको जन्मजन्ममें सुंदर फलकी प्राप्तिहो ॥ १६ ॥ ऐसे फल देवै ॥ चार बत्तियोंसे संयुक्त और घीसे पूरित ऐसी आरतीसे जगत्के पति संतुष्टहो ॥ १७ ॥ ऐसे आरती करै ॥ जन्मां

विवर्द्धय ॥ १५ ॥ इतितांबूलं ॥ इदंफलंमयादेवस्थापितंपुरतस्तव ॥ तेनमेसफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनिजन्मनि ॥ १६ ॥ इतिफलं ॥ चतुर्वर्तिसमायुक्तंघृतेनचसुपूरितम् ॥ नीराजनेनसंतुष्टोभवत्येवजगत्पतिः ॥ १७ ॥ इतिनीराजनं ॥ यानिकानिचपापानिजन्मांतरकृतानिच ॥ तानितानिविनश्यंतिप्रदक्षिणपदेपदे ॥ इति प्रदक्षिणा ॥ ततःपुष्पांजलिंनमस्कारांश्चकृत्वास्तुवीत ॥ यन्मयाभक्तियुक्तेनपत्रं

तरोंमें जो जो पाप कियेहैं वे वे सब परिक्रमा करनेसे पैर पैरमें नष्ट होतेहैं ॥ १८ ॥ ऐसे परिक्रमा देवै ॥ इसके पीछे पुष्पांजलि और नमस्कारको कर स्तुति करै ॥ भक्ति करकै जो मैंने पत्र पुष्प फल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जल नैवेद्य निवेदित कियाहै तिनको कृपाकरके ग्रहण कीजिये ॥ १ ॥ हे जनार्दन ! मंत्रसे हीन क्रियासे हीन भक्तिसे हीन जो पूजन मैंनें कियाहै वह सब मेरा संपूर्ण होवै ॥ २ ॥ अत्यंत गंभीर कमलकेसे नेत्रोंवाले नरसिंहरूपको धारनेवाले हिरण्यकशिपु दैत्यको मारनेवाले इंद्रियोंके स्वामी

पुष्पंफलंजलं ॥ निवेदितंचनैवेद्यंतद्गृहाणानुकंपया ॥ १ ॥ मंत्रहीनंक्रियाहीनंभक्तिहीनंजनार्दन ॥ यत्पूजितंमयादेवपरिपूर्णंतदस्तुमे ॥ २ ॥ अमोघंपुंडरीकाक्षंनृसिंहंदैत्यसूदनं ॥ हृषीकेशंजगन्नाथंवागीशंवरदायकम् ॥ ३ ॥ गुणत्रयंगुणातीतंगोविंदंगरुडध्वजं ॥ जनार्दनंजनातीतंजानकीवल्लभंहरिम् ॥ ४ ॥

जगत्के पति वाणीके नाथ वरके देनेवाले ॥ ३ ॥ तीन गुणोंके स्वरूपवाले तीन गुणोंसे परै गौकी पालना करनेवाले गरुडहै ध्वजामें जिन्होंके ऐसे और दुष्टजनोंको पीडा देनेवाले जनोंसे विलक्षण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जानकीके पति भक्तोंके दुःखोंको हरनेवाले ॥ ४ ॥ ऐसे श्रीमन्नारायणको सब कालमें भक्तिसे प्र-
णाम करताहूं. दुर्गम विषैं विषम विषैं घोरस्थान विषैं शत्रुओंसे पीडा होने विषैं ॥ ५ ॥ सब प्रकारके
अनिष्ट भयों विषैं हे स्वामिन्! उद्धार कीजिये इन नामोंका कीर्तन कर मनुष्य मनोवांछित फलको प्राप्त

प्रणमामिसदाभक्त्यानारायणमतःपरं ॥ दुर्गमेविषमेघोरेशत्रुभिःपरिपीडिते ५
निस्तारयस्वसर्वेषुतथानिष्टभयेषुच ॥ नामान्येतानिसंकीर्त्यईप्सितंफलमाप्नुया
त्‌६ सत्यनारायणंदेवंवंदेहंकामदंप्रभुं ॥ लीलयाविततंविश्वंयेनतस्मैनमोनमः७
इतिप्रार्थना॥अथ कथाप्रारंभः॥व्यासउ० एकदानैमिषारण्येऋषयःशौनकादयः

२ होताहै ॥ ६ ॥ कामनाको देनेवाला और प्रभु और अपनी लीलासे जगत्‌को विस्तृत करनेवाले
ऐसे सत्यनारायण देवको मैं प्रणाम करताहूं ॥ ७ ॥ ऐसे प्रार्थना करै ॥ अब कथाका आरंभ है ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

व्यासजी कहतेहैं—एक समय नैमिषारण्यमें शौनक आदि मुनि पुराणविद्याको जाननेवाले सूतजीसे निश्चय प्रश्न करते भये ॥ १ ॥ ऋषि बोले व्रतसे अथवा तपसे मनोवांछित क्या फल प्राप्त होताहै वह सब सुननेकी इच्छा करतेहैं. हे महामुने कहो ॥ २ ॥ सूतजी कहने लगे इसी प्रकार नारदजी

पप्रच्छुर्मुनयःसर्वेसूतंपौराणिकंखलु ॥ १ ॥ ऋषयऊचुः ॥ व्रतेनतपसाकिंवाप्राप्यतेवांछितंफलम् ॥ तत्सर्वंश्रोतुमिच्छामःकथयस्वमहामुने ॥२॥ सूतउवाच॥ नारदेनैवसंपृष्टोभगवान्कमलापतिः॥ सुरर्षयेयथैवाहतच्छृणुध्वंसमाहिताः ३ एकदानारदोयोगीपरानुग्रहकांक्षया॥ पर्यटन्विविधान्लोकान्मर्त्यलोकमुपाग

करके पूछेहुये लक्ष्मीजीके पति भगवान् नारदजीको जैसे कहते भये वह संवाद कहताहूं तुम सावधान होके सुनो ॥ ३ ॥ एक समय नारद योगी दूसरोंके अनुग्रहकी इच्छा करके अनेक लोकोंमें विच-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रते हुये मनुष्य लोकमें आते भये ॥ ४ ॥ तहां अनेक प्रकारके क्लेशोंसे युक्त हुये और अनेक प्रकारकी योनियोंसे उत्पन्न हुये अपने कर्मोंसे दुःखको भोगते हुये ऐसे मनुष्योंको देखके ॥ ५ ॥ किस उपायसे इनके दुःखका निश्चय नाश होवै इस प्रकार मनसे चिंतवनकरके बिष्णुलोकमें गये ॥ ६ ॥

तः ॥४॥ ततोदृष्ट्वाजनान्सर्वान्नानाक्लेशसमन्वितान् ॥ नानायोनिसमत्पन्नान्क्लिश्यमानान्स्वकर्मभिः ॥५॥ केनोपायेनचैतेषांदुःखनाशोभवेद्ध्रुवम् ॥ इतिसंचिंत्यमनसाविष्णुलोकंगतस्तदा ॥६॥ तत्रनारायणंदेवंशुक्लवर्णचतुर्भुजम् ॥ शंखचक्रगदापद्मवनमालाविभूषितं ॥७॥ दृष्ट्वातंदेवदेवेशंस्तोतुंसमुपचक्रमे ॥ नारद

तहां शुक्लवर्णवाले, चार भुजावाले, शंख, चक्र, गदा, पद्म, वनमाला, इन्होंसे अलंकृत हुये ऐसे नारायण देवको ॥ ७ ॥ देखके ऐसे देवताओंके देव जो भगवान् तिनकी स्तुति करने लगे ॥ नारद कहने लगे—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वाणी और मनसे आपका रूप जाननेमें नहीं आता. और तुह्मारी अनंत शक्ति हैं ऐसे आपको नम–
स्कार है ॥ ८ ॥ आदि मध्य अंतसे रहित गुणोंसे रहित सब गुणोंके आत्मा सबके आदिकारण
और भक्तोंकी पीडाको हरनेवाले ऐसे आपके अर्थ नमस्कार है ॥ ९ ॥ ऐसी स्तुति सुनके तहां

उवाच ॥ नमोवाङ्मनसातीतरूपायानंतशक्तये ॥८॥ आदिमध्यान्तहीनायनि
र्गुणायगुणात्मने ॥ सर्वेषामादिभूतायभक्तानामार्तिनाशिने ॥९॥ श्रुत्वास्तोत्रंत
तोविष्णुर्नारदंप्रत्यभाषत ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ किमर्थमागतोसित्वंकिंतेमनसि
वर्त्तते ॥१०॥ कथयस्वमहाभागतत्सर्वंकथयामिते ॥ नारदउवाच ॥ मर्त्यलोकेज

विष्णु भगवान् नारदके प्रति बोले ॥ श्रीभगवान् कहते हैं—तुम किसवास्ते आयेहो और तुमारे मनमें
क्याहै ॥ १० ॥ सो कहो. हे महाभाग ! वह सब तुमारे अर्थ कहताहूं ॥ नारद कहने लगे ॥ मनुष्यलोकमें ॥ ८ ॥
अनेक प्रकारके क्लेशोंसे युत हुये और अनेक प्रकारकी योनियोंमें उत्पन्न हुये मनुष्य पापकर्मोंसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दुःखपाते हैं ॥ ११ ॥ हे नाथ ! हलके उपायसे वह पापकर्म्म कैसे नष्ट होवें जो मुझपर आपकी कृपा है तो वह सब मैं सुननेकी इच्छा करताहूं ॥ १२ ॥ श्रीभगवान् कहते हैं—हे पुत्र ! लोकोंके अनुग्रहकी इच्छासे तैंनें सुंदर प्रश्न किया जिसको करके मनुष्य दुःखसे छूट जाते हैं वह सुन मैं तेरेको कह-

नाः सर्वेनानाक्लेशसमन्विताः॥ नानायोनिसमुत्पन्नाः पच्यंते पापकर्मभिः॥११॥
तत्कथंशमयेन्नाथलघूपायेनतद्वद ॥ श्रोतुमिच्छामितत्सर्वंकृपास्तियदितेमयि
॥१२॥ श्रीभगवानुवाच ॥ साधुपृष्टंत्वयावत्सलोकानुग्रहकांक्षया ॥ यत्कृत्वामु
च्यतेमोहात्तच्छृणुष्ववदामिते ॥१३॥ व्रतमस्तिमहत्पुण्यंस्वर्गेमर्त्येचदुर्लभम् ॥

ताहूं ॥ १३ ॥ स्वर्गमें और मनुष्यलोकमें दुर्लभ बडा पवित्र ऐसा सत्यनारायणका व्रत है. हे पुत्र ! तेरे स्नेहसे अब मैं प्रकाश करताहूं ॥ १४ ॥ सत्यनारायणके व्रतको अच्छी तरह विधानसे करके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मनुष्य शीघ्रही सुखको भोगके परलोकमें जाके मुक्तिको प्राप्त होता है ॥ १५ ॥ भगवान्के ऐसे वाक्यको सुन नारदमुनि बोले ॥ उस सत्यनारायण व्रतका क्या फल है क्या विधान है किसने वह

तवस्नेहान्मयावत्स प्रकाशः क्रियतेधुना ॥ १४ ॥ सत्यनारायणस्यैवंव्रतंसम्य ग्विधानतः ॥ कृत्वासद्यःसुखंभुक्त्वापरत्रमोक्षमाप्नुयात् ॥ १५ ॥ तच्छ्रुत्वाभगव द्वाक्यंनारदोमुनिरब्रवीत् ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ किंफलंकिंविधानंचकृतंकेनै वतद्व्रतम् ॥ १६ ॥ तत्सर्वंविस्तराद्ब्रूहिकदाकार्यंहितद्व्रतं ॥ ॥ श्रीभगवानु वाच ॥ दुःखशोकादिशमनंधनधान्यप्रवर्द्धनम् ॥ १७ ॥ सौभाग्यसंततिकरं

व्रत किया है ॥ १६ ॥ वह सब विस्तारसे कहो कि वह व्रत कब करना योग्यहै ॥ श्रीभगवान् कहते हैं—दुःख आदिको शांत करता है और धनधान्यको बढाता है ॥ १७ ॥ सौभाग्य और संता-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नको करताहै सब जगह विजयको देता है जिस किस दिनविषै भक्ति श्रद्धासे युत हुआ मनुष्य ॥ १८ ॥
सायंकालमें सत्यनारायण देवकी पूजा करै परंतु ब्राह्मण और भाइयों सहित धर्म्ममें तत्पर होके ॥
॥ १९ ॥ भक्तिभाव करके सवा सेर नैवेद्य केलाका फल घी दूध गेहूंका चून इन्होंको निवेदित करै ॥

सर्वत्रविजयप्रदम् ॥ यस्मिन्कस्मिन्दिनेमर्त्योभक्तिश्रद्धासमन्वितः ॥ १८ ॥
सत्यनारायणं देवं यजेच्चैव निशामुखे ॥ ब्राह्मणैर्बांधवैश्चैव सहितोधर्मतत्परः
॥ १९ ॥ नैवेद्यंभक्तितोदद्यात्सपादंभक्तिसंयुतम् ॥ रंभाफलंघृतंक्षीरगोधूमस्य
चचूर्णकम् ॥२०॥ अभावेशालिचूर्णंवाशर्करावागुडस्तथा ॥ सपादंसर्वभक्ष्याणि

॥ २० ॥ गेहूंका चून नहीं मिलै तो शालि (चावल) का चून लेवै. खांड अथवा गुड मिलाय सवा
मण वा सवा सेर ऐसे सब भक्ष्य भोज्य चोष्य लेह्य पदार्थोंको मिलाके निवेदित करै ॥ २१ ॥ मित्रोंके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स०ना० साथ कथा सुनके ब्राह्मणको दक्षिणा देवै. पीछे बांधवोंके साथ ब्राह्मणोंको भोजन करावै ॥ २२ ॥ पू०
॥१०॥ भक्तिसे प्रसादको भक्षणकरै. नाचना और गानेका आरंभकरै. पीछे सत्यनारायणका स्मरण करता
हुआ अपने घरको गमनकरै ॥ २३ ॥ ऐसे करनेसे मनुष्योंकी वांछा सिद्ध होतीहै. विशेषकरके क-

चैवेकीकृत्यनिवेदयेत् ॥२१॥ विप्रायदक्षिणांदद्यात्कथांश्रुत्वाजनैः सह ॥ ततश्च
बंधुभिःसार्धंविप्रांश्चप्रतिभोजयेत् ॥ २२ ॥ प्रसादंभक्षयेद्भक्त्यानृत्यगीतादिकं
चरेत् ॥ ततश्चस्वगृहंगच्छेत्सत्यनारायणंस्मरन् ॥ २३ ॥ एवंकृतेमनुष्याणांवां
च्छासिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ विशेषतःकलियुगेलघूपायोस्तिभूतले ॥ २४ ॥ इतिश्री

लियुग विषैं पृथिवी लोकमें यही स्वल्प उपायहै ॥ २४ ॥ यहां स्कंदपुराणमें रेवाखंडविषै सत्यनारा- ॥१०॥
यणव्रतकी कथामें प्रथम अध्याय समाप्त हुआ ॥ सूतजी कहते हैं—हे द्विज! पहले जिसनें यह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

व्रत किया है अब वह औरभी इतिहास कहताहूं. रमणीक काशीपुरमें अत्यंत निर्धन कोई एक ब्राह्मण हुआ ॥ १ ॥ वह भूंख और प्याससे व्याकुल होके नित्यप्रति पृथ्विमंडलमें भ्रमता भया. दुःखित हुये ब्राह्मणको देखके ब्राह्मणोंसे प्यार करनेवाले भगवान् ॥ २ ॥ वृद्धब्राह्मणके

स्कंदपुराणेरेवाखंडेसत्यनारायणव्रतकथायांप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ सूतउवाच ॥ अथान्यत्संप्रवक्ष्यामिकृतंयेनपुराद्विजाः ॥ कश्चित्काशीपुरेरम्येह्यासीद्विप्रोतिनिर्धनः ॥ १ ॥ क्षुत्तृड्भ्यांव्याकुलोभूत्वानित्यंबभ्रामभूतले ॥ दुःखितंब्राह्मणंदृष्ट्वा भगवान्ब्राह्मणप्रियः ॥ २ ॥ वृद्धब्राह्मणरूपस्तंपप्रच्छद्विजमादरात् ॥ किमर्थंभ्र

रूपको धारणकरके उस ब्राह्मणको आदरसे पूछने लगे हे विप्र ! अत्यंत दुःखित हुआ तूं नित्यप्रति किस वास्ते पृथिवीपर भ्रमता है ॥ ३ ॥ वह सब वृत्तांत सुननेकी मैं इच्छा करताहूं. हे द्विज

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सत्तम ! कहो ब्राह्मण बोला—मैं अत्यंत दरिद्री ब्राह्मण भिक्षाके वास्ते पृथिवीपर भ्रमताहूं ॥ ४ ॥
हे प्रभो ! जो आप उपाय जानते हो तो कृपा करके कहो. वृद्धब्राह्मण कहने लगे—सत्यनारायणविष्णु

मसे विप्र महीं नित्यं सुदुःखितः ॥ ३ ॥ तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि कथ्यतां द्विज
सत्तम ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ ब्राह्मणोतिदरिद्रोऽहं भिक्षार्थं वै भ्रमे महीम् ॥ ४ ॥
उपायंयदिजानासिकृपयाकथयप्रभो ॥ ॥ वृद्धब्राह्मणउवाच ॥ ॥ सत्यनारायणो
विष्णुर्वांछितार्थफलप्रदः ॥ ५ ॥ तस्यत्वंपूजनंविप्रकुरुष्वव्रतमुत्तमम् ॥ यत्कृ
त्वासर्वदुःखेभ्योमुक्तोभवतिमानवः ॥ ६ ॥ विधानंचव्रतस्यापिविप्रायाभाष्य

मनोवांछित प्रयोजन और फलको देता है ॥ ४ ॥ तिसका पूजन और उत्तम व्रतको तूं कर जि·
सको करके मनुष्य सब दुःखोंसे छूट जाता है ॥ ६ ॥ व्रतके विधानको जतनसे ब्राह्मणके अर्थ कहके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वृद्ध ब्राह्मणके रूपको धारण करनेवाले सत्यनारायणजी तहांही अंतर्धान हुये ॥ ७ ॥ जो वृद्ध ब्राह्म-
णने कहा है वह व्रत निश्चय करूंगा ऐसे चिंतवन करके वह ब्राह्मण रात्रिमें नींदको नहीं प्राप्त
हुआ ॥ ८ ॥ पीछे प्रातःकाल उठके सत्यनारायणके व्रतको करूंगा ऐसे संकल्प कर भिक्षा मांगनेके

यत्नतः ॥ सत्यनारायणोवृद्धस्तत्रैवांतरधीयत ॥ ७ ॥ तद्व्रतंसंकरिष्यामियदु
क्तंब्राह्मणेनवै ॥ इतिसंचिंत्यविप्रोऽसौरात्रौनिद्रां न लब्धवान् ॥ ८॥ ततःप्रातः
समुत्थायसत्यनारायणव्रतम् ॥ करिष्यइतिसंकल्प्यभिक्षार्थमगमद्द्विजः ॥ ९ ॥
तस्मिन्नेवदिनेविप्रः प्रचुरंद्रव्यमाप्तवान् ॥ तेनैव बंधुभिः सार्धं सत्यस्य व्रतमा

लिये गया ॥ ९ ॥ उसी दिनमें ब्राह्मणको बहुतसा धन मिला तिसी धन करके बांधवोंके साथ सत्य-
नारायणके व्रतको करता भया ॥ १० ॥ इस व्रतके प्रभावसे सब दुःखोंसे रहित सब प्रकारकी संप-
त्से समन्वित ऐसा वह ब्राह्मण हुआ ॥ ११ ॥ तिस कालसे लेके महीना महीनामें व्रत किया. ऐसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

 सत्यनारायणके इस व्रतको करके वह द्विजोत्तम ॥ १२ ॥ सब पापोंसे रहित होके दुर्लभ मोक्षको
प्राप्त हुआ. हे ब्राह्मणों! इस सत्यनारायणके व्रतको पृथिवीमें जो मनुष्य करैगा ॥ १४ ॥ तबही उस

चरत् ॥ १० ॥ सर्वदुःखविनिर्मुक्तःसर्वसंपत्समन्वितः ॥ बभूवसद्विजश्रेष्ठोव्रत
स्यास्यप्रभावतः ॥ ११ ॥ ततःप्रभृतिकालंचमासिमासिव्रतंकृतम् ॥ एवंनारा
यणस्येदंव्रतंकृत्वाद्विजोत्तमः ॥ १२ ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तोदुर्लभंमोक्षमाप्तवा
न् ॥ व्रतमस्ययदाविप्राःपृथिव्यांसंकरिष्यति ॥ १३ ॥ तदैवसर्वदुःखंचमनुज
स्यविनश्यति ॥ एवंनारायणेनोक्तंनारदायमहात्मने ॥ १४ ॥ मयातत्कथितंवि

मनुष्यका संपूर्ण दुःख नष्ट होवेगा ऐसे श्रीनारायणने महात्मा नारदजीके अर्थ कहा है ॥ १४ ॥ हे
ब्राह्मणों! वह मैंने कहा अब तुह्मारे प्रति और क्या कहूं! ऋषि बोले—हे सूत! उस ब्राह्मणसे सुनके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पृथिवीमें किसने व्रत किया वह सब सुननेकी इच्छा है क्योंकि हमको श्रद्धा उत्पन्न हुई है ॥ १५ ॥
सूतजी कहतेहैं—हे मुनिजनो ! सब सुनों पृथिवीलोकमें जिसने यह व्रत किया है एकसमय वह ब्रा-

प्राः किमन्यत्कथयामिवः ॥ ॥ ऋषयऊचुः ॥ ॥ तस्माद्विप्राच्छ्रुतंकेनपृथिव्यांच
रितंमुने ॥ तत्सर्वंश्रोतुमिच्छामःश्रद्धास्माकंप्रजायते ॥१५॥ सूतउवाच॥शृणुध्वं
मुनयःसर्वेव्रतंयेनकृतंभुवि ॥ एकदासद्विजवरोयथाविभवविस्तरैः ॥ १६ ॥ बंधु
भिःस्वजनैःसार्धंव्रतंकर्तुंसमुद्यतः॥एतस्मिन्नंतरेकालेकाष्ठक्रेतासमागमत् ॥१७
बहिःकाष्ठंचसंस्थाप्यविप्रस्यगृहमाययौ ॥ तृष्णयापीडितात्माचदृष्ट्वाविप्रंकृ

२ ह्मण यथायोग्य विभवके विस्तारकरके ॥ १६ ॥ बांधव और मित्रोंके साथ व्रत करनेको उद्यत हुआ
उसी कालमैं लकडियोंको बेचनेवाला मनुष्य आया ॥ १७ ॥ अरु लकडियोंको बाहिर स्थापि-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तकर ब्राह्मणके घरमैं जाके तृषासे पीडित हुआ व्रतको करनेवाले ब्राह्मणको देखके ॥ १८ ॥ ब्राह्म-
णको प्रणाम कर कहनेलगा कि—आप यह क्या करतेहैं यह करनेमें क्या फल प्राप्त होता है
प्रभो ! विस्तारसे मेरे प्रति कहो ॥ १९ ॥ ब्राह्मण बोला—ये सत्यनारायणका व्रत है यह व्रत सबप्रका-

तव्रतम् ॥ १८ ॥ प्रणिपत्यद्विजंप्राहकिमिदंक्रियतेत्वया ॥ कृतेकिंफलमाप्नोति
विस्ताराद्वदमेंप्रभो ॥ १९ ॥ ॥ विप्रउवाच ॥ ॥ सत्यनारायणस्येदंव्रतंसर्वेप्सित
प्रदम् ॥ तस्यप्रसादान्मेसर्वंधनधान्यादिकंमहत् ॥२०॥ तस्मादेतद्व्रतंज्ञात्वाका

रके मनोवांछितको देताहै तिसिके प्रसादसे मेरे बहुतसा धनधान्य आदि प्राप्त हुआहै ॥ २० ॥ तिस
कारणसे इस व्रतको लकडी बेचनेवाला पुरुष जानके अत्यंत आनंदित होके जलको पीके और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रसादकूं भक्षणकर नगरको गया ॥ २१ ॥ सत्यनारायणदेवको मनसे इसप्रकार चिंतवन करता भया कि लकडियोंके बेचनेमें आज मुझको जो धन प्राप्त होवेगा ॥ २२ ॥ उसी धनसे सत्यनारा-

ष्ठकेतातिहर्षितः ॥ पपौजलंप्रसादंचभुक्त्वासनगरंययौ ॥ २१ ॥ सत्यनारायणं देवंमनसाइत्यचिंतयत् ॥ काष्ठंविक्रयतोग्रामेप्राप्यतेमेऽद्ययद्धनं ॥२२॥ तेनैवस त्यदेवस्यकरिष्येव्रतमुत्तमम् ॥ इतिसंचिंत्यमनसाकाष्ठंधृत्वातुमस्तके ॥२३॥ ज गामनगरेरम्येधनिनांयत्रसंस्थितिः॥तद्दिनेकाष्ठमूल्यंचद्विगुणंप्राप्तवानसौ २४

यणके उत्तम व्रतको करूंगा ऐसे मनसे चिंतवन कर शिरपर लकडियोंको धर ॥ २३ ॥ रमणीक नगरमे गया जहां धनवाले मनुष्य वसतेथे उसी दिनमें लकडियोंका मोल दुगुना मिला ॥ २४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पीछे प्रसन्नहृदयवाला वह अच्छे पकेहुये केलाके फल खांड घी दूध गेहूंका चून ॥ २५ ॥ इन सबको सवासेर लेकै अपने घरको आया पीछे बांधवोंको बुलाके विधिसे व्रत करता भया ॥ २६ ॥

ततःप्रसन्नहृदयः सुपक्कं कदलीफलम् ॥ शर्कराघृतदुग्धंच गोधूमस्यचचूर्णकम् ॥ २५ ॥ कृत्वैकत्रसपादंचगृहीत्वास्वगृहंययौ ॥ ततोबंधून्समाहूयचकारविधिनाव्रतम् ॥ २६ ॥ तद्व्रतस्यप्रभावेणधनपुत्रान्वितोभवत् ॥ इहलोकेसुखंभुक्त्वा चांतेसत्यपुरंययौ ॥ २७ ॥ इतिश्रीस्कंदपुराणेरेवाखंडेसत्यनारायणव्रतकथायां द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ सूतउवाच ॥ पुनरग्रेप्रवक्ष्यामिश्रृणुध्वंमुनिसत्तमाः ॥

उस व्रतके प्रभावसे धन और पुत्रसे युक्त होके इसलोकमें सुखभोगके अंतमें सत्यपुरमें गया ॥ २७ ॥ यहां स्कंदपुराणमें रेवाखंडविषैं सत्यनारायणकी कथामें दूसरा अध्याय समाप्त हुआ ॥ २ ॥ सूतजी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कहतेहैं—फिर आगे कहताहूं हे मुनिसत्तमों! सुनो, पहले उल्कामुखनामवाला पृथिवीका पति राजा हुआ ॥ १ ॥ इंद्रियोंके जीतनेवाला सत्य बोलनेवाला वह राजा देवालयमें प्राप्त होके दिनदिन प्रति ब्राह्मणोंको धन देकै संतुष्ट करताभया ॥ २ ॥ तिसकी भार्या कमलके समान मुखवाली

पुराचोल्कामुखोनामनृपश्चासीन्महीपतिः ॥ १ ॥ जितेंद्रियःसत्यवादीययौदेवालयंप्रति ॥ दिनेदिनेधनंदत्वाद्विजान्संतोषयत्सुधीः ॥ २॥ भार्यातस्यप्रमुग्धाचसरोजवदनासती ॥ भद्रशीलानदीतीरेसत्यस्यव्रतमाचरत् ॥ ३ ॥ एतस्मिन्नंतरेतत्रसाधुरेकःसमागतः ॥ वाणिज्यार्थंबहुधनैरनेकैःपरिपूरितः ॥ ४ ॥ नावंसं

रूपवती और पतिव्रता भद्रशीला नामवाली हुई वे दोनों नदीके तीरपर सत्यनारायणका व्रत करतेभये ॥ ३ ॥ इसी समयमें साधुनामवाला एक वैश्य व्यवहारके लिये बहुतसे धनोंसे परिपूरित हुआ आया

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

॥ ४ ॥ उस नदीके तीरपर नावको स्थापित कर राजाके समीप गया. व्रतवाले राजाकों देखके नम्र-
तासें युक्त हुवा वह पूछताभया ॥ ५ ॥ साधु कहनेलगा—हे राजन् ! भक्तिसहित मनसे यह
क्या करतेहो वह सब मेरे सुननेकी इच्छा है अभी प्रकाश करो ॥ ६ ॥ राजा बोला—हे साधो

स्थाप्यतत्तीरेजगामनृपतिंप्रति ॥ दृष्ट्वासव्रतिनंभूपंपप्रच्छविनयान्वितः ॥ ५ ॥
॥ साधुरुवाच ॥ किमिदंकुरुषेराजन्भक्तियुक्तेनचेतसा ॥ प्रकाशंकुरुतत्सर्वंश्रोतु
मिच्छामिसांप्रतम् ॥ ६ ॥ राजोवाच ॥ पूजनंक्रियतेसाधोविष्णोरतुलतेजसः ॥
व्रतंचस्वजनैःसार्धंपुत्राद्यावाप्तिकाम्यया ॥ ७ ॥ भूपस्यवचनंश्रुत्वासाधुः प्रोवा

अतुलतेजवाले श्रीविष्णुका अपने मित्रोंके साथ पुत्र आदि प्राप्त होनेकी कामना करके पूजन
और व्रत करताहूं ॥ ७ ॥ राजाके आदरसहित वचन सुनके साधु कहने लगा कि—हे राजन् !

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सम्पूर्ण मेरे लिये कहो आपके कहनेको मैं करूंगा ॥ ८ ॥ मेरेभी सन्तान नहीं है इस व्रतसे
निश्चय होवैगी. पींछे व्यवहारसे निवृत्ति होके आनन्दसहित वह घरको आया ॥ ९ ॥ सन्तान दे-

चसादरम्॥सर्वंकथयमेराजन्करिष्येऽहंतवोदितम्॥८॥ममापिसंततिर्नास्तिह्येत
स्माज्जायतेध्रुवम् ॥ ततोनिवृत्यवाणिज्यात्सानंदोगृहमागतः ॥ ९ ॥ भार्यायैक
थितंसर्वंव्रतंसंततिदायकम्॥तदाव्रतंकरिष्यामियदामेसंततिर्भवेत्॥१०॥इतिली
लावतींप्राहपत्नींसाधुःससत्तमः॥एकस्मिन्दिवसेतस्यभार्यालीलावतीसती।११

नेवाला व्रत भार्याके आगै प्रकाशित किया. तब व्रत करूंगा जब मेरे सन्तान होवेगी ॥ १० ॥ ऐसे
सत्पुरुषोंमें उत्तम साधु वैश्य लीलावतीभार्याकेप्रति कहता भया. एक दिनमें तिसकी लीलावती-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भार्या ॥ ११ ॥ पतिके संयोगसें आनन्दसहित चित्तवाली धर्म्ममें परायण ऐसी वह पतिव्रता सत्य-
नारायणके प्रसादसे गर्भधारण करती हुई ॥ १२ ॥ तिसके दशमां महीनामें सुन्दरी कन्या जन्मी
वह दिनदिन प्रति बढती भई जैसे शुक्लपक्षमें चन्द्र बढताहै ॥ १३ ॥ तिसका कलावती नाम धरा-

भर्तृयुक्तानंदचित्ताऽभवद्धर्मपरायणा ॥ गर्भिणीसाभवत्तस्य भार्यासत्यप्रसा
दतः ॥ १२ ॥ दशमेमासिवैतस्याःकन्यारत्नमजायत ॥ दिनेदिनेसावबृधे
शुक्लपक्षेयथाशशी ॥ १३ ॥ नाम्नाकलावतीचेतितन्नामकरणंकृतम्॥ततोलीलाव
तीप्राहस्वामिनंमधुरंवचः ॥ १४ ॥ नकरोषिकिमर्थंवैपुरासंकल्पितंव्रतम् ॥ साधु

पीछे लीलावती पतिकों मधुर वचन कहने लगी ॥ १४ ॥ पूर्वसंकल्पित किया व्रत किसवास्ते नहीं
करते हो ॥ साधु कहने लगा—हे प्रिये ! इस कन्याके विवाहसमय व्रतको करूंगा ॥ १५ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ऐसे भार्याको विश्वास देके अन्य नगरोंमें गया, पीछे वह कन्या पिताके स्थानमें वृद्धिको प्राप्त होती भई ॥ १६ ॥ पीछे धर्मको जाननेवाला साधुवैश्य तिस कन्याकों देख मित्रोंके संग सलाहकर दूतको

रुवाच ॥ ॥ विवाहसमयेत्वस्याःकरिष्यामिव्रतंप्रिये ॥ १५ ॥ इतिभार्यांसमाश्वास्यजगामनगरंप्रति ॥ ततःकलावतीकन्याववृधेपितृवेश्मनि ॥ १६ ॥ दृष्ट्वाकन्यांततःसाधुर्नगरेसखिभिःसह ॥ मंत्रयित्वाद्रुतंदूतंप्रेषयामासधर्मवित् ॥१७॥ विवाहार्थंचकन्यायावरंश्रेष्ठंविचारय ॥ तेनाज्ञप्तश्चदूतोऽसौकांचनंनगरंययौ ॥ ॥१८॥ तस्मादेकंवणिक्पुत्रंसमादायागतोहिसः॥दृष्ट्वातुसुंदरंबालंवणिक्पुत्रंगुणा

शीघ्र भेजता भया ॥ १७ ॥ कन्याके विवाहके लिये श्रेष्ठ विचार कर तिसकी आज्ञाको प्राप्त होकै वह दूत कांचन नगरको गया ॥ १८ ॥ तिस नगरसे एक वैश्यके पुत्रको लेकै वह आया

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गुणवाला सुन्दर ऐसा वैश्यका पुत्र जो बालक है उसको देखके ॥ १९ ॥ भाई और मित्रोंके साथ
प्रसन्न मनवाला साधुवैश्य विधिविधानसे कन्याको देता भया ॥ २० ॥ पीछे भाग्यके वशसे कन्याके
 विवाहसमयमें उत्तम व्रत नहीं किया तिसकरके सत्यनारायण रुष्ट होते भये ॥ २१ ॥ पीछे शि-

न्वितम्॥१९॥ज्ञातिभिर्बंधुभिःसार्धंपरितुष्टेनचेतसा॥दत्तवान्साधुःपुत्रायकन्यांवि
धिविधानतः॥२०॥ततोभाग्यवशात्तेनविस्मृतंव्रतमुत्तमम्॥विवाहसमयेतस्या
स्तेनरुष्टोऽभवत्प्रभुः॥२१॥ततःकालेननियतोनिजकर्मविशारदः॥वाणिज्या
र्थंततःशीघ्रंजामातृसहितोवणिक्॥२२॥रत्नसारपुरेरम्येगत्वासिंधुसमीपतः॥

ग्रही अपने कर्म्ममें कुशल साधुवैश्य जमाईको साथ लेके व्यवहारके लिये ॥ २२ ॥ रमणीक रत्न
सारपुरमें समुद्रके समीप जाके वह साधु श्रीमान् जमाईके साथ व्यवहार करता भया ॥२३॥ वे दोनों चं-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

द्रकेतुराजाके रमणीकनगरमें गये इसी समयमें सत्यनारायणभगवान् ॥ २४ ॥ भ्रष्टप्रतिज्ञावाले साधु वैश्यको देख तिसके अर्थ शाप देते भये कि इस वैश्यको दारुण और कठिन ऐसा महद्दुःख होवेगा

वाणिज्यमकरोत्साधुर्जामात्राश्रीमतासह ॥ २३ ॥ तौगतौनगरेतस्यचंद्रकेतोर्नृपस्यच॥एतस्मिन्नेवकालेतुसत्यनारायणःप्रभुः॥ २४ ॥ भ्रष्टप्रतिज्ञमालोक्यशापंतस्मैप्रदत्तवान्॥ दारुणंकठिनंचास्यमहद्दुःखंभविष्यति॥२५॥ एकस्मिन्दिवसेराज्ञोधनमादायतस्करः ॥ तत्रैवचागतश्चौरोवणिजौयत्रसंस्थितौ ॥ २६ ॥ तत्पश्चाद्धावकान्दूतान्दृष्ट्वाभीतेनचेतसा॥धनंसंस्थाप्यतत्रैवसतुशीघ्रमलक्षितः

॥ २५ ॥ एकदिनके विषैं चोर राजाके धनको लेकै जहां दोनों वैश्य ठहर रहेथे तहां आया ॥ २६ ॥ पीछे दौडते हुये दूतोंको देखके भयसे डरे हुये मन करके तहांही धनको स्थापितकर चोर शीघ्र

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

 भाग गया ॥ २७ ॥ पीछे जहां वह साधु वैश्य ठहर रहा था तहां दूत आये तहां राजाके धनको देख-
 कै जमाई सहित साधुवैश्यको बांधके राजद्वारपै लाते भये ॥ २८ ॥ आनंदसे दौडते हुये दूत राजाके

॥ २७ ॥ ततोदूताःसमायातायत्रास्तेसज्जनोवणिक् ॥ दृष्ट्वानृपधनंतत्रबद्ध्वानीतौ
वणिक्सुतौ ॥२८॥ हर्षेणधावमानाश्चप्रोचुर्नृपसमापितः ॥ तस्करौद्वौसमानीतौवि
लोक्याज्ञापयप्रभो॥ २९ ॥ राज्ञाज्ञप्तास्ततःशीघ्रंदृढंबध्वातुतावुभौ॥ स्थापितौद्वौ
महादुर्गेकारागारेऽविचारतः ॥ ३० ॥ माययासत्यदेवस्यनश्रुतंकैस्तयोर्वचः ॥

समीप जाके कहने लगे—हे प्रभो ! दो चोर लाके प्राप्त किये हैं. आप देखके आज्ञा करो ॥२९ ॥ राजाकी
आज्ञासे झटपट उन दोनोंको करडा बांध विचारके विनाही कैदखानेमें प्राप्त किया ॥ ३० ॥ सत्यना-
रायणकी माया करके तिन दोनों वैश्योंका वचन किसीनेभी न सुना इसी कारणसे तिन दोनोंका धन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चन्द्रकेतु राजाने लेलिया ॥ ३१ ॥ सत्यनारायणके शापसे तिन दोनोंकी भार्याभी अत्यंत दुःखित भई और घरमें जो धन स्थित था वहभी चोरोंने हरलिया ॥ ३२ ॥ आधि और व्याधिसे युत हुई भूख

असस्तयोर्धनंराज्ञागृहीतंचंद्रकेतुना ॥३१॥ तच्छापाच्चतयोर्गेहेभार्याचैवातिदुःखिता ॥ चौरेणापहृतंसर्वंगृहेयच्चस्थितंधनम् ॥ ३२ ॥ आधिव्याधिसमायुक्ताक्षुत्पिपासातिदुःखिता ॥ अन्नचिंतापराभूत्वाबभ्रामचगृहेगृहे ॥ कलावतीतुकन्यापिबभ्रामप्रतिवासरम् ॥३३॥ एकस्मिन्दिवसेजाताक्षुधार्ताद्विजमंदिरं ॥ गत्वाप

४ प्याससे दुःखित हुई अन्नकी चिंता करनेवाली घरघरमें भ्रमने लगी और कलावती कन्या नित्यप्रति भ्रमती हुई ॥ २३ ॥ एकदिन भूखप्याससे पीडित हुई ब्राह्मणके घरमें जाके तहां सत्यनारायणके व्र-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तको देखती भई ॥ ३४ ॥ तहां बैठ कथा सुन वर मांगतीहुई प्रसाद भक्षण करके रात्रिमें घरको गई
॥ ३५ ॥ माता कलावतीकन्याको प्रेमसे कहने लगी हे पुत्रि ! रात्रिमें कहां थी क्या तेरे मनमें है

इयद्व्रतंतत्रसत्यनारायणस्यच ॥ ३४ ॥ उपविश्यकथांश्रुत्वावरंप्रार्थितवत्यपि ॥
प्रसादभक्षणंकृत्वाययौरात्रौगृहंप्रति ॥ ३५ ॥ माताकलावतींकन्यांकथयामास
प्रेमतः ॥ पुत्रिरात्रौस्थिताकुत्रकिंतेमनसिवर्तते ॥३६ ॥ कन्याकलावतीप्राहमात
रंप्रतिसत्वरम् ॥ द्विजालयेव्रतंमातर्दृष्टंवांछितसिद्धिदम् ॥ ३७ ॥ तच्छ्रुत्वाकन्य
कावाक्यंव्रतंकर्तुंसमुद्यता ॥ सामुदातुवणिग्भार्यासत्यनारायणस्यच ॥ ३८ ॥

॥ ३६ ॥ कलावती कन्या माताकेप्रति शीघ्र बोलि हे माता ! ब्राह्मणके घरमें वांछितको सिद्ध करने-
वाला सत्यनारायणका व्रत देखा ॥ ३७ ॥ कन्याके उस वाक्यको सुन वह वैश्यकी स्त्री आनंदसे स-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

त्यनारायणके व्रत करनेको उद्यत हुई ॥ ३८ ॥ वह साधुवैश्यकी स्त्री भाई और मित्रोंके साथ व्रत क-
रती भई कि मेरा पति और जमाई अपने स्थानको शीघ्र प्राप्तहों ॥ ३९ ॥ मेरे पतिके और जमाईके
अपराधको क्षमा कीजिये इस व्रत करके फिर प्रसन्न हुये सत्यनारायण ॥ ४० ॥ चंद्रकेतुराजाको

व्रतंचक्रेसैवसाध्वीबंधुभिःस्वजनैःसह ॥ भर्तृजामातरौक्षिप्रमागच्छेतांस्वमा
श्रमम् ॥ ३९ ॥ अपराधंचमेभर्तुर्जामातुःक्षंतुमर्हसि ॥ व्रतेनानेनतुष्टोसौसत्य
नारायणःपुनः ॥ ४० ॥ दर्शयामासस्वप्नंहिचंद्रकेतुंनृपोत्तमम् ॥ बंदिनौमोचय
प्रातर्वणिजौनृपसत्तम ॥ ४१ ॥ देयंधनंचतत्सर्वंगृहीतंयत्त्वयाधुना ॥ नोचेत्त्वां

स्वप्न दिखाते भये कि हे राजाओंमें श्रेष्ठ राजा ! कैदमें पडेहुये उन दोनों वैश्योंको प्रातःकाल छो-
डदे ॥ ४१ ॥ अब तेनें जो धन इनका लियाहै वह देना उचित है जो तूं ऐसे नहीं करैगा तो रा-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ज्य धन पुत्रसहित तुझको नष्ट करूंगा ॥ ४२ ॥ ऐसे राजाको कहके सत्यनारायण चुपहुये पीछे प्र-
भात समयमें राजा अपने मित्रोंके साथ ॥ ४३ ॥ सभाके मध्यमें बैठ स्वप्नको कहनेलगा कि बंध

नाशयिष्यामिसराज्यधनपुत्रकम् ॥४२॥ एवमाभाष्यराजानंध्यानगम्योभवत्प्र
भुः ॥ ततःप्रभातसमयेराजाचस्वजनैःसह ॥४३॥ उपविश्यसभामध्येप्राहस्वप्नं
जनंप्रति ॥ बद्धौमहाजनौशीघ्रंमोचयद्वौवणिक्सुतौ ॥४४॥ इतिराज्ञोवचःश्रुत्वा
मोचयित्वामहाजनौ ॥ समानीयनृपस्याग्रेप्राहुस्तेविनयान्विताः ॥४५॥ आनी
तौद्वौवणिक्पुत्रौमुक्तौनिगडबंधनात् ॥ ततोमहाजनौनत्वाचंद्रकेतुंनृपोत्तमम्

को प्राप्त हुये इन दोनों वैश्योंको शीघ्र छोडदो ॥ ४४ ॥ ऐसे राजाके वचनको सुनके दोनों वैश्योंको
छोडके राजाके आगे प्राप्तकर नम्रतासे युत हुये राजाके नोकर कहने लगे ॥ ४५ ॥ ये दोनों वैश्य-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पुत्र जेलखानासे प्राप्त किये हैं तिसके पश्चात् दोनों महाजन राजाओंमें उत्तम जो चन्द्रकेतु राजा ता-
को प्रणाम करके ॥ ४६ ॥ पूर्ववृत्तांतका स्मरण करते हुये भयसे विन्हल होके नहीं बोलते भये. रा-
जा दोनों वैश्योंको देखकर आदरसहित बचन बोला ॥ ४७ ॥ कि दैवयोगसे बडा दुःख प्राप्त

॥ ४६ ॥ स्मरंतौपूर्ववृत्तांतंनोचतुर्भयविन्हलौ ॥ राजावणिक्सुतौवीक्ष्यवचःप्रो
वाचसादरम् ॥ ४७ ॥ दैवात्प्राप्तंमहद्दुःखमिदानींनास्तिवैभयं ॥ तदानिगडसं
त्यागंक्षौरकर्माद्यकारयत् ॥ ४८ ॥ वस्त्रालंकारकंदत्वापरितोष्यनृपश्चतौ ॥
पुरस्कृत्यवणिक्पुत्रौवचसातोषयद्भृशम् ॥ ४९ ॥ पुरानीतंतुयद्द्रव्यंद्विगुणीकृत्यद

हुआ है, अब तुमको भय नहीं है, तब बेडी कटवाके क्षौर आदि कर्म्म करवाता भया ॥ ४८ ॥ राजा
उन दोनोंको वस्त्र और आभूषण देके प्रसन्नकर अपने संमुख बुला वचनसे अत्यन्त संतुष्ट करताभ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

या ॥ ४९ ॥ पहले जो धन लियाथा उस्से दुगुना देके उन दोनोंसे बोले हे साधुवैश्य! अपने घरको गमन कीजिये ॥ ५० ॥ राजाको प्रणाम करके वैश्य कहने लगा कि—आपके प्रसन्नतासे गमन होना

त्तवान् ॥ प्रोवाचतौततोराजागच्छसाधोनिजाश्रमम् ॥५०॥ राजानंप्रणिपत्याह गंतव्यंत्वत्प्रसादतः ॥ इत्युक्त्वातौमहावैश्योजग्मतुःस्वगृहंप्रति ॥ ५१ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणेरेवाखंडेसत्यनारायणव्रतकथायांतृतीयोध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ यात्रांतुकृतवान्साधुर्मंगलायनपूर्विकाम् ॥ ब्राह्मणेभ्योधनंदत्वातदातु

योग्यहै ऐसे कहके दोनों वैश्य अपने घरको गये ॥ ५१ ॥ यहां स्कन्दपुराणमें रेवाखंड विषै सत्यना-रायणकी कथामें तीसरा अध्याय समाप्त हुआ ॥ ३ ॥ सूतजी कहते हैं—मंगलपूर्वक यात्राकों साधुवैश्य

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करताभया ब्राह्मणके अर्थ धन देके अपने नगरको चला ॥ १ ॥ कितनेक दूर चला गया तब सत्यनारा-
यण स्वामी दंडीका भेष करके साधु वैश्यसे बोले कि—हे प्रिय ! तेरी नावमें क्या स्थितहै यह जाननेकी
इच्छाहै ॥ २ ॥ तब वे दोनों वैश्य उन्मत्त होके अनादरसे हंसके कहने लगे—हे दंडिन् ! क्या पू-

नगरंययौ ॥१॥ कियद्दूरेगतेसाधौसत्यनारायणःप्रभुः ॥ जिज्ञासांकृतवान्साधो
किमस्तितवनौस्थितम् ॥२॥ ततोमहाजनौमत्तौहेलयाचप्रहस्यवै ॥ कथंपृच्छ
सिभोदंडिन्मुद्रांनेतुंकिमिच्छसि ॥३॥ लतापत्रादिकंचैववर्ततेतरणौमम ॥ निष्ठु
रंचवचःश्रुत्वासत्यंभवतुतेवचः ॥४॥ एवमुक्त्वागतःशीघ्रंदंडीतस्यसमीपतः ॥

छता है तेरी कुछ रुपया लेनेकी इच्छा है क्या ॥ ३ ॥ मेरी नावमें लतापत्ता आदिक हैं ऐसा झूठा
और कठोरवचन सुनके प्रभु कहते भये तेरा वचन सत्य हो ॥ ४ ॥ ऐसे कहके तिसके स-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मीपसे दंडी स्वामीके रूपको धारणकरनेवाले सत्यनारायण चले गये. थोडीसी दूर जाके समुद्रके समीप बैठ गये ॥ ५ ॥ जब दंडी चलागया तब साधुवैश्य नित्यकर्म्मसे निवृत्त होके हलके पनसे उठी हुई नावको देखके अत्यंत आश्चर्यको प्राप्त हुआ ॥ ६ ॥ लता पत्ता आदिको देख

कियद्दूरेततोगत्वास्थितःसिंधुसमीपतः ॥ ५ ॥ गतेदंडिनिसाधुश्चकृतनित्यक्रियस्तदा ॥ उत्थितांतरणींदृष्ट्वाविस्मयंपरमंययौ ॥ ६ ॥ दृष्ट्वालतादिकंचैवमूर्च्छितोन्यपतद्भुवि ॥ लब्धसंज्ञोवणिक्पुत्रस्ततश्चिंतान्वितोभवत् ॥ ७ ॥ तदातुदुहितुःकांतोवचनंचेदमब्रवीत् ॥ किमर्थंक्रियतेशोकःशापोदत्तश्चदंडिना ॥८॥ शक्यते

मूर्च्छाको प्राप्त हो पृथिवीपर पडताभया. पीछे संज्ञाको प्राप्त होके वैश्यपुत्र चिंतासे अन्वित हुआ ॥ ७ ॥ तब साधुवैश्यका जमाई कहने लगा किसवास्ते शोक करते हो दंडीने शाप दिया है ॥ ८ ॥ वह दंडी सब कुछ कर सकता है इसमें संशय नहीं इस कारणसे तिस दं-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

डीकी शरण प्राप्त होवो तब वांछित प्रयोजन होगा ॥ ९ ॥ जमाईके वचनको सुन उस दंडीके समीप गया दंडीको देखके भक्तिसे प्रणाम कर आदरसहित कहने लगा ॥ १० ॥ जो मैंने आपके समीप कहा है उस मेरे अपराधको क्षमा कीजिये ऐसे

ने नसर्वंहिकर्तुंचात्रनसंशयः ॥ अतस्तच्छरणंयामोवांछितार्थोभविष्यति ॥ ९ ॥
जामातुर्वचनंश्रुत्वातत्सकाशंगतस्तदा ॥ दृष्ट्वाचदंडिनंभक्त्यानत्वाप्रोवाचसाद
रम् ॥ १० ॥ क्षमस्वचापराधंमेयदुक्तंतवसन्निधौ ॥ एवंपुनःपुनर्नत्वामहाशोकाकु
लोभवत् ॥ ११ ॥ प्रोवाचवचनंदंडीविलपंतंविलोक्यच ॥ मारोदीःशृणुमद्वाक्यं

वारंवार प्रणाम करके महा शोकसे युत हुआ ॥ ११ ॥ उस विलाप करते हुयेको देखके दंडी बचन बोला मत रोवै मेरे वाक्यको सुन तू मेरी पूजासे बहिर्मुख है ॥ १२ ॥ हे दुष्टबुद्धिवाले !

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मेरी आज्ञासे वारंवार दुःख भोगा उस भगवान्के बचनको सुन स्तुति करने लगा ॥ १३ ॥ साधु-
वैश्य बोला तेरी मायासे मोहित हुये ब्रह्मा आदि देवता हे प्रभो ! तेरे गुण रूप आश्चर्य्यको नहीं

ममपूजाबहिर्मुखः ॥ १२ ॥ ममाज्ञयाचदुर्बुद्धेलब्धंदुःखंमुहुर्मुहुः ॥ तच्छ्रुत्वाभ
गवद्वाक्यंस्तुतिंकर्तुंसमुद्यतः ॥ १३ ॥ साधुरुवाच ॥ त्वन्मायामोहिताःसर्वेब्र
ह्माद्यास्त्रिदिवौकसः॥नजानंतिगुणान्रूपंतवाश्चर्यमिदंप्रभो ॥ १४ ॥ मूढोहंत्वां
कथंजानेमोहितस्तवमायया॥ प्रसीदपूजयिष्यामियथाविभवविस्तरैः ॥ १५ ॥
पुरावित्तंचतत्सर्वंत्राहिमांशरणागतम् ॥ श्रुत्वाभक्तियुतंवाक्यंपरितुष्टोजनार्दनः

जानते ॥ १४ ॥ तुह्मारी मायासे मोहित हुवा मैं मूढ तुमको कैसे जानूं यथायोग्य विभवके
विस्तारसे पूजा करूंगा अब प्रसन्न हो ॥ १५ ॥ पाहिले जो मेरा धन था वैसाही करो शरणागत

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हुआ जो मैं हूं मेरी रक्षा करो ऐसे भक्तिसहित वचन सुनके भगवान् प्रसन्न हुये ॥ १६ ॥ वांछित वर देके तहांही अन्तर्धान हुये पीछे नावपर चढ धनसे पूरित हुई नावको देख ॥ १७ ॥ सत्यनारायणकी कृपासे मेरा वांछित सफल हुआ ऐसे कहके अपने मित्रोंके साथ विधिपूर्वक पूजा

॥१६॥ वरंचवांछितंदत्वातत्रैवांतर्दधेहरिः ॥ ततोनावंसमारुह्यदृष्ट्वावित्तप्रपूरितां ॥१७॥ कृपयासत्यदेवस्यसफलंवांछितंमम ॥ इत्युक्त्वास्वजनैःसार्धंपूजांकृत्वाय थाविधि ॥१८॥ हर्षेणचाभवत्पूर्णःसत्यदेवप्रसादतः ॥ नावंसंयोज्ययत्नेनस्वदेश गमनंकृतम् ॥ १९ ॥ साधुर्जामातरंप्राहपश्यरत्नपुरींमम ॥ दूतंचप्रेषयामासनिज

कर ॥ १८ ॥ सत्यनारायणके प्रसादसे आनंद करके पूर्ण हो जतनसे युक्तकर अपने देशको चला ॥ १९ ॥ साधु वैश्य जमाईसे कहने लगा कि—हे प्रिय ! मेरी रत्नपुरीको देख

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपने धनकी रक्षा करनेवाले दूतको भेजताहूं ॥ २० ॥ वह दूत नगरमें जाके साधुवैश्यकी स्त्रीको देख अंजली बांधके प्रणाम कर वांछित बचनको कहता भया ॥ २१ ॥ नगरके समीपही

वित्तस्यरक्षकम् ॥ २० ॥ दूतोसौनगरंगत्वासाधुभार्यांविलोक्यच ॥ प्रोवाचवांछि
तंवाक्यंनत्वाबद्धांजलिस्तदा ॥२१ ॥ निकटेनगरस्यैवजामात्रासहितोवणिक् ॥
आगतोबंधुवर्गैश्चवित्तैश्चबहुभिर्युतः ॥२२॥ श्रुत्वादूतमुखाद्वाक्यंमहाहर्षवतीस
ती ॥ सत्यपूजांततःकृत्वाप्रोवाचतनुजांप्रति ॥ २३ ॥ व्रजामिशीघ्रमागच्छसा

जमाई और मित्रोंसहित साधुवैश्य बहुतसा धन लेके आया है ॥ २२ ॥ दूतके मुखसे वचन सुन अत्यन्त आनन्दवाली साधुवैश्यकी स्त्री सत्यनारायणकी पूजा कर पुत्रीसे बोली ॥ २३ ॥ साधुके देखनेको मैं जातीहूं तूं शीघ्र चलीआ ऐसे माताके वचनको सुन व्रतको समाप्त कर ॥ २४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रसादका त्याग कर वहभी पतिको देखनेके लिये गई तिस करके रोषको प्राप्त हुये सत्यनारायण पतिसहित नावको ॥ २६ ॥ धनके साथही जलमें डबोते भये पीछे कलावती कन्या अपने

घुसं दर्शनायच ॥ इतिमातृवचःश्रुत्वाव्रतंकृत्वासमाप्यच ॥ २४ ॥ प्रसादंचपरि त्यज्यगतासापिपतिंप्रति॥तेनरुष्टःसत्यदेवोभर्तारंतरणींतथा ॥२५॥ संहृत्यचध नैःसार्धंजलेतस्यावमज्जयत्॥ततःकलावतीकन्यानविलोक्यनिजंपतिं॥२६॥शो केनमहतातत्ररुदतीचापतद्भुवि॥ दृष्ट्वातथाविधांनावंकन्यांचबहुदुःखितां॥२७॥ भीतेनमनसासाधुःकिमाश्चर्यमिदंभवेत्॥चिंत्यमानाश्चतेसर्वेबभूवुस्तरिवाहकाः

५ पतिको नहीं देखके ॥ २६ ॥ अत्यंत शोकसे रोवती हुई पृथिवीमें गिर पडी. जलमें डूबी हुई नावको और अत्यन्त दुःखित हुई पुत्रीको देखके ॥ २७ ॥ डरता हुआ मनसे साधु बोला यह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्या आश्चर्य हुआ नावको चलानेवाले सब चिन्ता करने लगे ॥ २८ ॥ पीछे लीलावती कन्याको देख विव्हल होके अत्यन्त दुःखसे विलाप करके पतिसे यह बचन बोली ॥ २९ ॥ अब नाव-सहित जमाई कहां गया न जाने किस देवताके अपराधसे यह दुःख भया ॥ ३० ॥ सत्य-

॥२८॥ ततोलीलावतीकन्यांदृष्ट्वासाविव्हलाभवत् ॥ विललापातिदुःखेनभर्तारंचेदमब्रवीत् ॥२९॥ इदानींनौकयासार्धंकथंसोऽभूदलक्षितः॥नजानेकस्यदेवस्यहेलयाचैवसाहृता॥३०॥ सत्यदेवस्यमाहात्म्यंज्ञातुंवाकेनशक्यते ॥ इत्युक्त्वाविललापैवततश्चस्वजनैःसह ॥ ३१ ॥ ततोलीलावतीकन्यांक्रोडेकृत्वारुरोदह ॥ ततः

नारायणके माहात्म्यको कौन जान सकता है ऐसे कहके अपने बन्धुओंसहित विलाप करती भई ॥ ३१ ॥ पीछे लीलावती अपनी पुत्रीको गोदमें बैठाके रोती भई पीछे नष्ट हुए पतिसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दुःखित हुई कलावती भी ॥ ३२ ॥ पतिकी खडाऊ लेके मरनेकी इच्छा करने लगी. कन्याके चरित्रको देख स्त्रीसहित साधु वैश्य ॥ ३३ ॥ अत्यंत शोकसे व्याकुल होके चिंता करने लगा. श्रीसत्यनारायणने हर लिया अथवा मैं सत्यनारायणकी मायासे भ्रमको प्राप्त

कलावतीकन्यानष्टेस्वामिनिदुःखिता ॥ ३२ ॥ गृहीत्वापादुकांतस्यानुगंतुंचमनो दधे ॥ कन्यायाश्चरितंदृष्ट्वासभार्यःसज्जनोवणिक् ॥ ३३ ॥ अतिशोकेनसंतप्त श्चिंतयामासधर्मवित् ॥ हृतंवासत्यदेवेनभ्रांतोऽहंसत्यमायया॥३४॥सत्यपूजांक रिष्यामियथाविभवविस्तरैः ॥ इतिसर्वान्समाहूयकथयित्वामनोरथम् ॥ ३५ ॥

हुआ हूं ॥ ३४ ॥ जैसा मेरे विभवका विस्तार है तिस करके सत्यनारायणकी पूजा करूंगा ऐसे सबको बुला मनोरथ कहके ॥ ३५ ॥ पृथिवीमें दंडवत् प्रणाम सत्यनारायणको करने

CC-0. Jahgamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लगा तब प्रसन्न हुये दीनोंकी प्रतिपालना करनेवाले सत्यनारायण ॥ ३६ ॥ कृपासे भक्तवत्सल होके उसको बोले तेरी पुत्री प्रसादको त्यागकर पति देखनेको आई है ॥ ३७ ॥ इस कारणसे उसका पति निश्चय अंतर्धान हुआ है, घरमें जाके प्रसाद ले जो कदाचित् फिर यहां

नत्वाचदण्डवद्भूमौसत्यदेवंपुनःपुनः ॥ ततस्तुष्टःसत्यदेवोदीनानांपरिपालकः॥
॥ ३६ ॥ जगादवचनंचैनंकृपयाभक्तवत्सलः ॥ त्यक्त्वाप्रसादंतेकन्यापतिंद्रष्टुंस
मागता ॥ ३८ ॥ अतोऽदृष्टोऽभवत्तस्याःकन्यकायाःपतिर्ध्रुवम् ॥ गृहंगत्वाप्रसा
दं चभुक्त्वासायातिचेत्पुनः ॥ ३८ ॥ लब्धभर्त्रींसुतासाधोभविष्यतिनसंशयः॥

आवैगी ॥ ३८ ॥ तो हे साधो ! पतिको देखैगी इसमें संशय नहीं आकाशमंडलसे उस वचनको सुनके वह पुत्री ॥ ३९ ॥ तभी घरमें जाके शीघ्र प्रसादको लेके पीछे फिर तहां

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आके सुंदरपतिको देखती भई ॥ ४० ॥ पीछे कलावती पितासे बोली घरको चलो विलंब किस वास्ते करते हो ॥ ४१ ॥ तब पुत्रीके बचनको सुन साधु वैश्य प्रसन्न हुआ सत्यनारायणके

कन्यकाताद‍ृशंवाक्यंश्रुत्वागगनमंडलात् ॥ ३९॥ क्षिप्रंतदागृहंगत्वाप्रसादंचबु भोजसा ॥ सापश्चात्पुनरागत्यददर्शसजनंपतिं ॥ ४० ॥ ततःकलावतीकन्या जगादपितरंप्रति ॥ इदानींचगृहंयाहिविलंबंकुरुषेकथं ॥ ४१ ॥ तच्छ्रुत्वाकन्यका वाक्यंसंतुष्टोऽभूद्वणिक्सुतः ॥ पूजनंसत्यदेवस्यकृत्वाविधिविधानतः ॥ ४२ ॥ धनैर्बंधुगणैःसार्धंजगामनिजमंदिरम् ॥ पौर्णमास्यांचसंक्रांतौकृतवान्सत्यपूजनं

पूजनको विधिविधानसे कर ॥ ४२ ॥ धन सहित बंधुओंके संग अपने घरको गया. पौर्णमासी और संक्रातिमें सत्यनारायणका पूजन करता भया ॥ ४३ ॥ इस लोकमें सुख भोगके अन्तमें सत्य-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पुरको गया ॥ ४४ ॥ यहां स्कन्दपुराणमें रेवाखंडविषे सत्यनारायणकी कथामें चौथा अध्याय समाप्त हुआ ॥ ४ ॥ सूतजी कहते हैं—हे मुनिसत्तमो ! सुनो अब अन्य कुछ कहता हूं प्रजाकी

॥ ४३ ॥ इहलोकेसुखंभुक्त्वाचांतेसत्यपुरंययौ ॥ ४४ ॥ इतिश्रीस्कंदपुराणेरेवाखंडेसत्यनारायणव्रतकथायांचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ अथान्यच्चप्रवक्ष्यामिशृणुध्वंमुनिसत्तमाः ॥ आसीत्तुंगध्वजोराजाप्रजापालनतत्परः ॥ १ ॥ प्रसादंसत्यदेवस्य त्यक्त्वादुःखमवापसः ॥ एकदासवनंगत्वाहत्वाबहुविधान्पशून् ॥ २ ॥ आगत्यवटमूलंचापश्यत्सत्यस्यपूजनं ॥ गोपाः

पालना करनेवाला तुंगध्वज नाम करके राजा हुआ ॥ १ ॥ सो सत्यनारायणके प्रसादको त्यागकर दुःखको प्राप्त हुआ. एक समय वह वनमें जाके बहुतसे पशुओंको मार ॥ २ ॥ बडके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मूलके नीचे आता भया यहां आके प्रसन्न और भक्तिसे युत हुए गोप सत्य नारायणकी पूजा कररहेथे ॥ ३ ॥ उस पूजाको देख गर्वसे राजा पूजाके समीप न गया और न प्रणाम करता भया. पीछे गोपलोग राजाके समीप प्रसाद स्थापित कर फिर वहीं आके उत्तम प्रसाद ग्रहण करने

कुर्वंतिसंतुष्टाभक्तियुक्ताःसबांधवाः ॥ ३ ॥ राजादृष्ट्वातुदर्पेणनगतोनननाम
सः ॥ ततोगोपगणाःसर्वेप्रसादंनृपसंनिधौ ॥ ४ ॥ संस्थाप्यपुनरागत्यभु
क्त्वासर्वेयथेप्सितं ॥ ततःप्रसादंसंत्यज्यराजादुःखमवापसः ॥ ५ ॥ तस्यपु
त्रशतंनष्टंधनधान्यादिकंचयत् ॥ सत्यदेवेनतत्सर्वंनाशितंममनिश्चितं ॥ ६ ॥

लगे. पीछे राजाने प्रसादको त्याग दिया त्यागके दुःखको प्राप्त हुआ ॥५॥ उस राजाके सौ पुत्र और धनधान्य आदि नष्ट हुये. पीछे राजा बोला कि मेरा सब कुछ सत्यनारायणने नष्ट किया है ॥ ६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस कारणसे जहां सत्यनारायणकी पूजा है तहां मैं जाताहूं यह मनमें निश्चय कर गोपलोगके समीप गया ॥ ७ ॥ पीछे वह राजा गोपलोगोंके साथ भक्तिश्रद्धासे युक्त होके विधिसे सत्यनारायणकी पूजा करता भया ॥ ८ ॥ तब सत्यनारायणके प्रसादसे धन पुत्र आदिसे युत होके इस लोकमें सुख भोग

अतस्तत्रैवगच्छामियत्रदेवस्यपूजनं ॥ मनसातुविनिश्चित्यययौगोपालसंनिधौ ॥ ७॥ ततोऽसौसत्यदेवस्यपूजांगोपगणैःसह ॥ भक्तिश्रद्धान्वितोभूत्वाचकारविधिनान्नृपः ॥ ८ ॥ सत्यदेवप्रसादेनधनपुत्रान्वितोऽभवत् ॥ इहलोकेसुखंभुक्त्वा चातेसत्यपुरंययौ ॥ ९ ॥ यइदंकुरुतेसत्यव्रतंपरमदुर्लभम् ॥ शृणोतिचकथांपु

पीछे अन्तमें सत्यपुरको गया ॥ ९ ॥ जो मनुष्य परमदुर्लभरूपी सत्यनारायणके इस व्रतको करता है और भक्तिसे युत होके फलको देनेवाली कथाको सुनता है ॥ १० ॥ सुनके सत्यनारायणके प्र-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सादसे धनधान्यआदि होता है. दरिद्री मनुष्य धनको प्राप्त होताहै, बन्धाहुआ बन्धनसे छूट जाता है ॥ ११ ॥ भयवाला भयसे छूट जाता है. यह सत्य है इसमें संशय नहीं. यहां वांछित फल भोगके अन्तमें सत्यपुरमें जाता है ॥ १२ ॥ हे ब्राह्मणों ! इस प्रकार तुह्मारे प्रति सत्यनारायणका व्रत

ण्यांभक्तियुक्तःफलप्रदाम् ॥ १० ॥ धनधान्यादिकंतस्यभवेत्सत्यप्रसादतः ॥ दरिद्रोलभतेवित्तंबद्धोमुच्येतबंधनात् ॥ ११॥ भीतोभयात्प्रमुच्येतसत्यमेवनसंशयः ॥ ईप्सितंचफलंभुक्त्वाचांतेसत्यपुरंव्रजेत् ॥ १२ ॥ इतिवःकथितंविप्राःसत्यनारायणव्रतम्॥यत्कृत्वासर्वदुःखेभ्योमुक्तोभवतिमानवः।१३।विशेषतःकलियुगे

कहा जिसको करके मनुष्य सब दुःखोंसे छूट जाता है ॥ १३ ॥ विशेष करके कलियुगमें सत्यनारायणकी पूजा फलको देती है. कितनेक मनुष्य काल कहेंगे कितनेक सत्य कहेंगे ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कितनेक ईश कहेंगे ॥ १४ ॥ कितनेक सत्यनारायण कहेंगे कितनेक सत्यदेव कहेंगे अनेक प्रकारके रूपोंको धारणकर सबको वांछित फल देता है ॥ १५ ॥ कलियुग विषैं सत्यव्रतरूपी सनातन सत्यनारायण होवेंगे. श्रीविष्णुने सबको वांछित फल देनेवाला रूप धारण किया है ॥

सत्यपूजाफलप्रदा ॥ केचित्कालंवदिष्यंतिसत्यमीशंतमेवच ॥ १४ ॥ सत्यनारायणंकेचित्सत्यदेवंतथापरे ॥ नानारूपधरोभूत्वासर्वेषामीप्सितप्रदः ॥ १५ ॥ भविष्यतिकलौसत्यव्रतरूपीसनातनः ॥ श्रीविष्णुनाधृतंरूपंसर्वेषामीप्सितप्रदम् ॥ १६ ॥ यइदंपठतेनित्यंशृणोतिमुनिसत्तमाः ॥ तस्यनश्यंतिपापानिसत्यदेवप्र

॥ १६ ॥ हे मुनिजनोंमें उत्तमो ! जो ये कथा नित्य पढता है और सुनता है उसके सत्यनारायणके प्रसादसे पाप नष्ट होजाते हैं ॥ १७ ॥ पहिले जिन्होंने सत्यनारायणका व्रत किया है हे मुनीश्वरो !

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तिन्होंके अन्यजन्मोंको कहता हूं ॥ १८ ॥ बहुत बुद्धिमान् शतानन्द नामवाला सुदामा ब्राह्मण हुआ उस जन्ममें श्रीकृष्णका ध्यान कर मुक्तिको प्राप्त हुआ ॥ १९ ॥ लकडियोंके भारको वहने-

सादतः ॥ १७ ॥ व्रतंयैस्तुकृतंपूर्वंसत्यनारायणस्यच ॥ तेषांत्वपरजन्मानिकथ यामिमुनीश्वराः ॥ १८ ॥ शतानन्दोमहाप्राज्ञःसुदामाब्राह्मणोह्यभूत् ॥ तस्मिञ्ज न्मनिश्रीकृष्णंध्यात्वामोक्षमवापह ॥ १९ ॥ काष्ठभारवहोभिल्लोगुहराजोबभूव ह ॥ तस्मिञ्जन्मनिश्रीरामंसेव्यमोक्षंजगामवै ॥२०॥ उल्कामुखोमहाराजोनृपोद शरथोभवत् ॥ श्रीरामचंद्रंसंप्राप्यश्रीवैकुंठंतदागमत् ॥ २१ ॥ धार्मिकःसत्यसंध

वाला गुहराज नामक भिल्ल हुआ उस जन्ममें श्रीरामचन्द्रकी सेवाकर मुक्तिको प्राप्त हुआ ॥ २० ॥ उल्कामुख जो राजा है वह दशरथ हुआ श्रीरामचन्द्रजीकूं प्राप्त कर वैकुण्ठको गया ॥ २१ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धर्मात्मा और सत्य बोलनेवाले साधु वैश्य मोरध्वज राजा हुआ अपने सांधे शरीरको करौतसे कटवा-
यके ब्राह्मणके अर्थ देके मुक्तिको प्राप्त हुआ ॥ २२ ॥ तुंगध्वज राजा स्वायंभुव मनु हुआ सबको

श्वसाधुर्मोरध्वजोभवत् ॥देहार्धंक्रकचैश्छित्वादत्वामोक्षमवापह॥२२॥तुंगध्वजो
महाराजःस्वायंभूरभवत्किल॥सर्वान्भागवतान्कृत्वाश्रीवैकुंठंतदागमत् ॥२३॥
इतिश्रीस्कंदपुराणे सत्यनारायणव्रतकथायां पंचमोध्यायः ॥ ५ ॥

श्रीभागवत बनाके श्रीवैकुण्ठमें गया ॥ २३ ॥ यहां स्कन्दपुराणमें सत्यनारायणकी कथा समाप्त हुई ॥

यह पुस्तक ज्ञानसागरछापाखानेके मालिक पं० किसनलाल श्रीधरजी इन्होंने स्वकीय
यन्त्रालयमें छापके प्रसिद्ध किया. संवत् १९६० शके १८२५ मुंबई.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सूचना.

हमारे ज्ञानसागर छापाखानामें अनेक तरहके वैदिक, वेदांत, पुराण, धर्मशास्त्र, कर्मकांड, व्याकरण, न्याय, छंदोपनिषद, काव्य, अलंकार, नाटक, चंपू, कोश, वैद्यक अरु प्रकीर्णग्रंथ स्तोत्रादि. ख्याल, किस्सा, वगैरे अनेक तरहके भाषा अरु संस्कृतग्रंथ छपकर तैयारहैं. जो किसी महाशयोंको चाहिये सो दाम भेजकर मंगालेवैं. पूर्व दामोंका निश्चै करना होय तो सब पुस्तकोंका सूचीपत्र आधे आनेका टिकट भेजकर मंगालेवैं.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना:—

पंडित श्रीधर शिवलालजी ज्ञानसागर छापाखाना (मुंबई.)

अजमेरमें पं० श्रीधर शिवलालजीका ज्ञानसागर पुस्तकालय नयाबजार (अजमेर.)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

॥ इतिसत्यनारायणव्रतपूजाकथासमाप्ता ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri